अध्याय – 16

राष्ट्रीय आय का मापन
(Measurement of National Income)

राष्ट्रीय आय की गणना हेतु बहुत सावधानी की आवश्यकता होती है। राष्ट्रीय आय की सही गणना के लिए पूर्ण सैद्धान्तिक जानकारी होनी चाहिए। राष्ट्रीय आय की गणना के आधार पर आर्थिक–विश्लेषण, भावी अनुमान तथा नीति–निर्माण व तदनुसार प्रभावी क्रियान्वन निर्भर करता है। राष्ट्रीय आय की गणना की विधियाँ भिन्न–भिन्न दृष्टिकोण पर निर्भर करती है। पूर्व के अध्ययन से स्पष्ट है कि एक देश में राष्ट्रीय आय का चक्राकार प्रवाह (Circular Flow of Income) होता है। राष्ट्रीय आय के चक्राकार प्रवाह के कारण एक पक्ष का व्यय जैसे–परिवार, दूसरे पक्ष जैसे व्यवसाय, की आय बन जाता है। इसके विपरीत होने पर भी कोई अन्तर नहीं हो सकता है। इसलिए राष्ट्रीय आय की गणना की विभिन्न विधियों की जानकारी करनी चाहिए।

राष्ट्रीय आय की गणना की विधियाँ– राष्ट्रीय आय की गणना मुख्यतः तीन विधियों से की जाती हैः–

1. उत्पादन विधि अथवा मूल्य–सम्वर्धन विधि
2. आय विधि
3. व्यय विधि।

राष्ट्रीय आय की गणना उत्पादन–विधि, आय–विधि या व्यय–विधि, किसी के भी द्वारा करने पर राष्ट्रीय आय के प्रवाह की मात्रा समान ही रहती है। यह समानता रहने का मूल कारण इस प्रकार हैः–

एक देश में जितना भी उत्पादन होता है उसे बेचकर जो प्राप्त धनराशि ∈ उत्पादन में सहयोगी (योगदानकर्ता), उत्पादन के साधनों (श्रम, पूँजी, भूमि, तकनीक–संगठन व साहस) के मालिकों में वितरित वह समस्त राशि होकर उन सबकी आय ∈ देश के लोगों के पास जितनी आय होती है, उस सीमा तक उनका खर्च (व्यय) बन जाता है।

अतः देश का कुल उत्पादन देश की कुल आय हो जाती है। एक देश के लोगों के पास जितनी आय होती है उस सीमा तक वे खर्च (व्यय) कर सकते हैं। अतः देश की कुल आय देश के कुल व्यय के रूप में बदल जाती है। इस प्रकार :–

कुल राष्ट्रीय उत्पादन ≡ कुल राष्ट्रीय आय ≡ कुल राष्ट्रीय व्यय

(Gross National Product) ≡ (Gross National Income) ≡ (Gross National Expenditure)

1. उत्पादन विधिः– अधिकांश देशों की राष्ट्रीय आय की गणना उत्पादन–विधि से करते हैं। यह राष्ट्रीय आय में गणना की सबसे सरल विधि होती है। किसी भी देश की राष्ट्रीय आय की गणना उत्पादन–विधि से करने के लिए कृषि, खनिजों व उद्योगों एवं विभिन्न सेवा क्षेत्रों से उत्पादित अन्तिम उपभोग्य–वस्तुओं व सेवाओं को शामिल किया जाता है। यह ज्ञात रहे कि यहाँ अन्तिम उपभोग्य–वस्तुओं व सेवाओं का उपभोग एक उपभोक्ता अपनी दैनिक आवश्यकताओं हेतु अथवा एक उत्पादक द्वारा उत्पादन (निवेश) के लिए किया जाता है।

राष्ट्रीय आय की गणना हेतु उत्पादित अन्तिम उपभोग्य–वस्तुओं व सेवाओं की एक विस्तृत–सूची बनाई जाती है। उत्पादित अन्तिम उपभोग्य–वस्तुओं व सेवाओं की सूची में प्रत्येक वस्तु या सेवा का नाम, उत्पादन–मात्रा, बाजार में प्रचलित कीमत का उल्लेख किया जाता है। अन्तिम उपभोग्य–वस्तुओं व सेवाओं की मात्रा व कीमत को गुणा करते हुए उत्पादन का मूल्य ज्ञात करते हैं। अन्त में सभी उत्पादित अन्तिम उपभोग्य–वस्तुओं व सेवाओं के मूल्यों को जोड़ते हैं। इस प्रकार सकल (कुल) राष्ट्रीय–उत्पाद (अर्थात् उत्पादन) की गणना की जाती है।

कुछ वस्तुओं व सेवाओं की प्रकृति अन्तरिम या मध्यवर्ती की होती है। अन्तरिम या मध्यवर्ती वस्तुओं व सेवाओं को उत्पादन–प्रक्रिया में काम लेते हैं। अन्तरिम या मध्यवर्ती वस्तुओं व सेवाओं को राष्ट्रीय आय की गणना हेतु सम्मिलित नहीं किया जाता है। अन्तरिम या मध्यवर्ती वस्तुओं व सेवाओं को सम्मिलित किया जाने पर राष्ट्रीय आय की दोहरी–गणना या भ्रामक–गणना हो जाती है।

उत्पादन–विधि से राष्ट्रीय आय की गणना करते समय कई बातों का ध्यान रखना चाहिए। राष्ट्रीय आय की दोहरी या अनेक बार होने वाली भ्रामक गणना से बचने के लिए केवल अन्तिम उपभोग्य–वस्तुओं व सेवाओं के मूल्यों का ही योग करते हैं। राष्ट्रीय

आय की दोहरी गणना से बचने के लिए उत्पादन – विधि की मूल्य–सम्वर्धन विधि का प्रयोग किया जाता है। मूल्य–सम्वर्धन विधि के द्वारा प्रत्येक चरण पर उत्पादन का सही–सही मूल्य ज्ञात किया जाता है। सकल राष्ट्रीय–उत्पाद का सही–सही मूल्य ज्ञात करने के लिए उत्पादन के मूल्यों में से उत्पादन के साधनों पर किये गये खर्च को घटाते हैं। अर्थात् पहले चरण पर उत्पाद के मूल्य को घटा देते है जिसे निम्न उदाहरण से समझ सकते हैं।

तालिका 16.1

क्र. सं.	उत्पादित वस्तु/सेवा का नाम	मात्रा	बाजार कीमत	मूल्य (रु. में)
1.	अ	20	2	40
2.	ब	30	8	240
3.	स	10	6	60
4.	द	40	4	160
5.	य	10	2	20
—	——	—	—	——
—	——	—	—	——
कुल राष्ट्रीय–उत्पादन				520

दोहरी–गणना व मूल्य वृद्धि विधि का उदाहरणः–

माना एक बेकरी डबलरोटी का 1 किलोग्राम का पैकेट 60 रु. में बेचता है, इसे बनाने के लिए 1 किलोग्राम आटा 40 रु. में आटा–चक्की से खरीदता है, आटा–चक्की का मालिक 1 किलोग्राम गेंहू 30 रु. में किसान से खरीदता है। ऐसी स्थिति में बेकरी, आटा–चक्की व किसान के 1–1 किलोग्राम उत्पादन का भ्रामक मूल्य होगा–60+40+30=130 । किन्तु इसी स्थिति में देश में उत्पादन तो केवल 1 किलोग्राम ही हुआ। अतः उत्पादन का वास्तविक मूल्य = किसान के उत्पादन का मूल्य + आटा चक्की के उत्पादन का वास्तविक मूल्य + बेकरी के उत्पादन का सही–सही मूल्य = (बेकरी के उत्पादन का मूल्य – आटा चक्की के उत्पादन का मूल्य) + (आटा चक्की के उत्पादन का मूल्य – किसान के उत्पादन का मूल्य) + किसान के उत्पादन का मूल्य = 20+10+30 = 60 रु.। इस प्रकार केवल 1 किलोग्राम उत्पादन का सही मूल्य 130 रु के स्थान पर मात्र 60 रु हुआ। अतः राष्ट्रीय आय की गणना करते समय इस बात का ध्यान नही रखा जाता है तो राष्ट्रीय आय की गणना गलत मूल्य बतायेगी जो भ्रामक होगी।

मूल्यह्रासः–

उत्पादन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया होती है। उत्पादन करते समय उत्पादन के साधनों में टूट–फूट, घिसावट (मूल्यह्रास) या इसी प्रकार की अन्य हानियाँ होती हैं। पूँजी की (मशीनें इत्यादि) टूट–फूट व घिसावट होती है। नयी तकनीक की मशीनें इत्यादि बाजार में आ जाने के कारण पुरानी पूँजी (मशीनें इत्यादि) बेकार हो जाती हैं। उत्पादन के कारण भूमि की उपजाऊ क्षमता में कमी होती है। इस तरह उत्पादन–प्रक्रिया से कमायी गई शुद्ध राष्ट्रीय आय की गणना के लिए घिसावट (मूल्यह्रास) एक प्रकार की हानि होती है। इसीलिए घिसावट (मूल्यह्रास) को सकल राष्ट्रीय आय में से घटाया जाता है।

2. आय विधि–

आय विधि से राष्ट्रीय आय की गणना के द्वारा एक देश में आय के वितरण की जानकारी मिलती है। उत्पादन के साधनों (श्रम, भूमि, पूँजी इत्यादि) द्वारा उत्पादन किया जाता है। किसी वस्तु व सेवा में उपयोगिता का सृजन या उपयोगिता में वृद्धि करके उत्पादन किया जाता है। उत्पादन के साधनों को उत्पादन का पूर्णतः वितरण हो जाता है। यह वितरण – श्रम की कीमत– मजदूरी, पूँजी के उपयोग की कीमत– ब्याज, भूमि के उपयोग की कीमत– लगान, उद्यमशीलता के उपयोग की कीमत– लाभ इत्यादि के रूप में होता है। उत्पादन का पूर्णतः वितरण उत्पादन के साधनों में हो जाने के बाद शेष कुछ भी नहीं बचता है।

राष्ट्रीय आय की गणना के लिए उत्पादन के साधनों को वितरित आय के निम्न घटक होते हैंः–

(1.) मजदूरी — कर्मचारियों को क्षतिपूर्ति
(2.) ब्याज
(3.) लगान/किराया–भाड़ा — परिचालन अतिरेक
(4.) लाभ
(5.) मिश्रित–आयः–वेतन या कमीशन के रूप में

इस प्रकार उत्पादन के पूर्णतः वितरण से प्राप्त प्रतिफल उत्पादन के साधनों (श्रम, भूमि, पूँजी इत्यादि) के मालिकों की साधन आय होती है। अतः आय विधि से राष्ट्रीय आय की गणना के लिए साधन आय को जोड़ते हैं। इस प्रकार सकल मजदूरी, सकल ब्याज, सकल लगान, सकल लाभ इत्यादि के रूप में प्राप्त प्रतिफलों का योग करते हुए सकल राष्ट्रीय आय ज्ञात की जाती है।

∴ सकल राष्ट्रीय आय = मजदूरी + ब्याज + लगान + लाभ + घिसावट ।

∴ NNI = W + I + R + ≈ + विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय है जिसे $NNP_{FC} = NDP_{FC} + NFIA$ के रूप में भी दिखाया जाता है।

जहाँः– W= मजदूरी, i = ब्याज, R = लगान ≈ = लाभ से आय हैं।

राष्ट्रीय आय की गणना की सावधानियां–

आय विधि से राष्ट्रीय आय की गणना के लिए कई बार

सावधानी रखनी चाहिए जैसे– स्वयं के रोजगार से आय, नकद के स्थान पर वस्तु व सेवा के रूप में दी जाने वाली मजदूरी, स्वयं के मकान में रहना, उत्पादन का थोड़ा सा हिस्सा अपने लिए रख लेना व आय को सरकार को कम बताना या बताना ही नहीं। ऐसी स्थिति में सावधानी पूर्वक इन सभी मदों को आय विधि से राष्ट्रीय आय की गणना के लिए जोड़ा जायेगा।

3. व्यय विधि–

राष्ट्रीय आय की गणना के लिए जब व्यय विधि का उपयोग करते हैं तो सकल राष्ट्रीय व्यय की राशि ज्ञात करने के लिए एक वर्ष में होने वाले व्ययों (जीवन निर्वाह हेतु, पूँजीगत उपभोग हेतु, अधिक उत्पादन के लिए निजी पूँजीगत व्ययों, सरकार के व्ययों व शुद्ध विदेशी व्ययों) तथा घिसावट (मूल्यह्रास) का योग करते हैं।

राष्ट्रीय आय की गणना के लिए एक देश में होने वाले व्यय के प्रमुख निम्न घटक होते हैं:–

(1.) निजी–उपभोग
(2.) विनियोग / निवेश
(3.) सरकारी व्यय
(4.) शुद्ध निर्यात

(1.) निजी–उपभोग व्यय :– व्यक्तियों व परिवारों द्वारा होने वाले उपभोग–व्यय को निजी–उपभोग व्यय कहा जाता है। निजी–उपभोग व्यय के अर्न्तगत जिन वस्तुओं व सेवाओं पर किया जाता हैं वे निम्न प्रकार की होती है:–

(1.) अस्थायी उपभोक्ता वस्तुएँ
(2.) टिकाऊ–उपभोक्ता वस्तुएँ
(3.) उपभोक्ता–सेवाएँ

(2.) विनियोग / निवेश व्यय :–

निवेश एक प्रकार का उत्पादन के लिए किया जाने वाला व्यय होता है। एक निश्चित अवधि में होने वाले निवेश के कारण पूँजी के भण्डार (Stock) में वृद्धि होती है। उत्पादन–प्रक्रिया में अन्य साधनों के साथ–साथ पूँजी की घिसावट (Depreciation) होती है। यह घिसावट (Depreciation) एक प्रकार की हानि होती है। घिसावट (Depreciation) के लिए एक प्रकार प्रावधान (Provision) किया जाता है। यह प्रावधान 'पूँजी के उपभोग का प्रावधान' (Capital Consumption Allowance) कहलाता है। निवेश चार प्रकार के होते हैं:–

(1.) व्यावसायिक स्थिर–निवेश
(2.) माल के भण्डारों में निवेश
(3.) गृह–निर्माण में निवेश
(4.) सरकारी निवेश

(3.) सरकारी व्यय :–

सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ व सेवाएँ प्रदान की जाती है। एक देश की सरकार के व्यय को उत्पादन में योगदान के रूप में माना जाता है। सरकारी व्यय में शिक्षा, चिकित्सा, प्रतिरक्षा, कानून व व्यवस्था इत्यादि सम्मिलित होते हैं। सरकारी खरीद पर व्यय के अलावा भी सरकार अन्य व्यय करती है। राष्ट्रीय आय की गणना करने के लिए सरकार द्वारा कर्मचारियों को क्षतिपूर्ति भुगतान, सरकारी–उपभोगव्यय व स्थायी पूँजी का उपभोग–व्यय को सम्मिलित करते हैं। सरकार लोगों को सामाजिक सुरक्षा के लिए धन का हस्तान्तरण करके व्यय करती है। ध्यान रहे कि विभिन्न प्रकार के हस्तान्तरण–व्यय बिना उत्पादक कार्यों के ही किये जाते हैं। अतः हस्तान्तरण–व्ययों को राष्ट्रीय आय की गणना करने के लिए नहीं जोड़ते हैं।

(4.) शुद्ध निर्यात व्यय :–

एक निश्चित अवधि में होने वाले आयात व निर्यात के अन्तर के आधार पर शुद्ध निर्यात व्यय ज्ञात किया जाता है। राष्ट्रीय आय की गणना हेतु शुद्ध निर्यात व्यय सम्मिलित करते हुए सकल राष्ट्रीय–व्यय की गणना निम्न प्रकार की जाती है:–

≺ सकल राष्ट्रीय व्यय = परिवारों का उपभोग व्यय + निजी निवेश व्यय + सरकारी व्यय + शुद्ध विदेशी व्यय

$$\prec \ GDP_{MP} = C + I + G + (X - M)$$

जहाँ:– C= उपभोग व्यय, I = निजी निवेश व्यय, G = सरकारी व्यय व (X-M) = आयात–निर्यात हैं।

राष्ट्रीय आय की गणना की समस्याएँ–

राष्ट्रीय आय की गणना करते समय कई कठिनाईयाँ आती है। केवल सैद्धान्तिक समस्याएँ ही नहीं आती है। कम विकसित देशों में लोग अनपढ़ होते हैं। कम विकसित देशों में ज्यादातर उत्पादन का वस्तु–विनिमय (Barter Exchange) होता हैं। बहुत सारे लेनदेन बाजार के बाहर होने के कारण सरकार को जानकारी ही नहीं होती है। पिछड़े देशों में श्रम–विभाजन व विशिष्टीकरण नहीं होता है। राष्ट्रीय–आय की सूचना आसानी से नहीं मिलती है। राष्ट्रीय–आय के आंकड़े भी कम विश्वसनीय होते हैं। इस प्रकार राष्ट्रीय आय की गणना करना कठिन होता है।

राष्ट्रीय–आय व आर्थिक कल्याण में सम्बन्ध :–

कल्याण से अभिप्राय व्यक्ति अथवा समाज की उस स्थिति से होता है जब दोनों प्रसन्न और संतुष्ट होते हैं। अर्थशास्त्रियों के अनुसार आर्थिक कल्याण से आश्य उस कल्याण से होता है जिसे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से मुद्रा द्वारा मापा जा सकता है।

राष्ट्रीय–आय व आर्थिक कल्याण में गहरा सम्बन्ध देखने को मिलता है। यह माना जाता है कि राष्ट्रीय आय के बढ़ने के साथ–साथ एक देश के लोगों का आर्थिक कल्याण भी बढता है।

राष्ट्रीय आय का स्तर, राष्ट्रीय–उत्पादन में वृद्धि होने पर, बढ़ता है। राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि के कारण राष्ट्रीय व्यय भी बढ़ जाता है। राष्ट्रीय व्यय के बढ़ने पर आर्थिक कल्याण अधिक हो जाता है। एक देश के लोगों का आर्थिक कल्याण अधिक मात्रा में वस्तुओं व सेवाओं के उपभोग के कारण बढता है। इसी प्रकार राष्ट्रीय आय का देश के लोगों में बँटवारा समतापूर्ण किया जाना चाहिए।

1. सामान्यतः यह माना जाता है कि राष्ट्रीय आय का लोगों की सन्तुष्टि /प्रसन्नता से गहरा सम्बन्ध होता है। राष्ट्रीय आय का वितरण जितना समतापूर्ण होगा आर्थिक कल्याण उतना ही अधिक मात्रा में होगा। राष्ट्रीय–आय की विषमता के कारण कई प्रकार की आर्थिक अकुशलताएँ उत्पन्न होती हैं। आर्थिक अकुशलताएँ देश के विकास की गति को धीमा करती है। आय के वितरण के अतिरिक्त 2. आय को अर्जित करने का तरीका, 3. आय को व्यय करने का ढंग, 4. कार्यस्थल की दशाऐं आदि घटक भी आर्थिक कल्याण को प्रभावित करते हैं।

आजकल आर्थिक कल्याण को पर्यावरण की दशा के साथ जोड़ कर देखा जाने लगा है। एक नयीं शब्दावली 'हरित–लेखांकन' (Green Accounting) का प्रयोग किया जाता है। 'हरित–लेखांकन' में पर्यावरण की हानि का अध्ययन किया जाता है। पर्यावरण की हानि की मात्रा को राष्ट्रीय–आय से घटाकर 'पर्यावरण–संशोधित राष्ट्रीय–आय' (Environment Adjusted National Income) ज्ञात की जाती है। वर्तमान में 'पर्यावरण संशोधित राष्ट्रीय आय' (Environment Adjusted National Income) की अवधारणा को अपनाया जाने लगा है। इस प्रकार राष्ट्रीय आय का वितरण व पर्यावरण की दशा को अच्छा बनाये रखते हुए प्रत्येक देश आगे बढ़ना चाहता है। राष्ट्रीय आय का समतापूर्ण वितरण व पर्यावरण की उत्तम दशा होना आवश्यक है। समतापूर्ण वितरण व पर्यावरण की उत्तम दशा से एक देश में टिकाउ विकास (Sustainable development) किया जा सकता हैं।

टिकाउ विकास (Sustainable development) भविष्य की आवश्यकताओं को प्रभावित किये बिना वर्तमान की आवश्कताओं पूर्ति करने वाला विकास सतत विकास कहलाता है।

महत्वपूर्ण बिन्दु

- राष्ट्रीय आय की गणना मुख्यतः तीन विधियों से की जाती है:– उत्पादन विधि अथवा मूल्य–सम्वर्धन विधि, आय विधि व व्यय विधि।
- एक देश में कुल राष्ट्रीय–उत्पादन =कुल राष्ट्रीय आय= कुल राष्ट्रीय व्यय होते हैं।
- राष्ट्रीय आय की गणना उत्पादन–विधि से करते समय देश में उत्पादित अन्तिम उपभोग्य–वस्तुओं व सेवाओं को शामिल विचार करते हैं।
- राष्ट्रीय आय की दोहरी गणना से बचने के लिए मूल्य–सम्वर्धन विधि का प्रयोग किया जाता है।
- उत्पादन करते समय उत्पादन के साधनों में टूट–फूट, घिसावट (मूल्यह्रास), या इसी प्रकार की अन्य हानियाँ होती हैं। जिसे पूँजीगत–उपभोग भत्ता भी कहते हैं।
- आय विधि से राष्ट्रीय आय की गणना के लिए सकल मजदूरी, सकल ब्याज, सकल लगान, सकल लाभ इत्यादि के रूप में प्राप्त प्रतिफलों का योग करते हुए सकल राष्ट्रीय आय ज्ञात की जाती है।
- राष्ट्रीय आय की गणना व्यय विधि से करने के लिए एक वर्ष में होने वाले व्ययों (जीवन निर्वाह हेतु, पूँजीगत उपभोग हेतु, अधिक उत्पादन के लिए निजी पूँजीगत व्ययों, सरकार के व्ययों व शुद्ध विदेशी व्ययों) तथा घिसावट (मूल्यह्रास) का योग करते हैं।
- राष्ट्रीय आय की गणना करते समय सैद्धान्तिक व अन्य प्रकार की समस्याएँ लोगों के अनपढ़ होने, वस्तु–विनिमय, व बाजार के बाहर लेनदेन होने के कारण उत्पन्न होती हैं।
- राष्ट्रीय आय के बढ़ने के साथ–साथ एक देश के लोगों का आर्थिक कल्याण भी बढता है। राष्ट्रीय आय का वितरण जितना समतापूर्ण होगा आर्थिक कल्याण उतना ही अधिक मात्रा में होगा। राष्ट्रीय आय की विषमता के कारण कई प्रकार की आर्थिक अकुशलताएँ उत्पन्न होती हैं।
- आजकल आर्थिक कल्याण को पर्यावरण की दशा के साथ जोड़ नयीं शब्दावली 'हरित–लेखांकन' का प्रयोग किया जाता है। पर्यावरण की हानि की मात्रा को राष्ट्रीय आय से घटाकर 'पर्यावरण–संशोधित राष्ट्रीय आय' ज्ञात की जाती है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. राष्ट्रीय आय की गणना की विधियाँ हैं –
   (अ) उत्पादन विधि (ब) आय विधि
   (स) व्यय विधि (द) उपर्युक्त सभी
2. भारत में राष्ट्रीय आय की गणना के लिए कौन सी वस्तुओं को सम्मिलित करतें हैं ?
   (अ) मध्यवर्ती–वस्तुओं व सेवाओं को
   (ब) अर्द्धनिर्मित –वस्तुओं व सेवाओं को
   (स) अन्तिम उपभोग्य वस्तुओं व सेवाओं को
   (द) कच्चे माल को
3. राष्ट्रीय आय की किस विधि में दोहरी–गणना की त्रुटि की संभावना होती है –
   (अ) व्यय विधि (ब) उत्पादन विधि

(स) आय विधि (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

4. राष्ट्रीय आय की आय विधि से गणना के घटक नहीं हैं ?
   (अ) मजदूरी व ब्याज
   (ब) लगान / किराया–भाड़ा
   (स) मिश्रित–आय व लाभ
   (द) अन्तिम उपभोग्य वस्तुएँ व सेवाएँ
5. 'हरित–लेखांकन' में किस पर विचार किया जाता हैं ?
   (अ) अंधाधुंध औद्योगीकरण पर
   (ब) तीव्र रोजगार वृद्धि पर
   (स) पर्यावरण की हानि पर
   (द) निजी–उपभोग में तीव्र वृद्धि पर

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. राष्ट्रीय आय की गणना की कितनी विधियाँ होती हैं ?
2. राष्ट्रीय आय की गणना के लिए किस प्रकार की वस्तुओं व सेवाओं को सम्मिलित करते हैं ?
3. राष्ट्रीय आय की दोहरी–गणना की त्रुटि से बचने के लिए कौन सी विधि अपनाते हैं ?
4. राष्ट्रीय आय की आय विधि से गणना के कौन–कौन से घटक होते हैं ?
5. 'हरित–लेखांकन' किसे कहते हैं ?
6. राष्ट्रीय–आय का बँटवारा किस प्रकार का होने पर आर्थिक कल्याण अधिक मात्रा में बढ़ता हैं ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. राष्ट्रीय आय की गणना की विधियों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।
2. दोहरी–गणना की त्रुटि से बचने के लिए मूल्य–संवर्द्धन विधि किस प्रकार उपयोगी होती हैं ?उदाहरण देकर समझाइये।
3. आय विधि से राष्ट्रीय आय की गणना को संक्षेप में समझाइये।
4. राष्ट्रीय आय की गणना की कौन–कौन सी समस्याएँ होती हैं ?संक्षेप में समझाइये।
5. आर्थिक कल्याण व राष्ट्रीय–आय का वितरण में सम्बन्ध को संक्षेप में समझाइये।

निबन्धात्मक प्रश्न–

1. राष्ट्रीय आय की गणना की विभिन्न विधियों का विस्तृत वर्णन कीजिए।
2. उत्पादन–विधि से राष्ट्रीय आय की गणना को विस्तार से समझाइये।
3. व्यय–विधि से राष्ट्रीय आय की गणना का विस्तृत वर्णन कीजिए।
4. राष्ट्रीय आय में वृद्धि से आर्थिक कल्याण में वृद्धि होती है। क्या आप इस कथन से सहमत हैं अपने विचार लिखिए।

उत्तर तालिका

1	2	3	4	5
द	स	ब	द	स